

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर की पत्रकारिता और सामाजिक-आर्थिक समानता का विचार

डॉ. नीलेश साहू*

nk.nilesh18@gmail.com

डॉ. ओमप्रकाश†

ajayomprakash77488@gmail.com

1. परिचय

डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर, जिन्हें बाबासाहेब के नाम से जाना जाता है, भारतीय समाज में सामाजिक-आर्थिक समानता के प्रबल समर्थक थे। उनकी पत्रकारिता, विशेष रूप से *मूकनायक* (1920), *बहिष्कृत भारत* (1927), *जनता* (1930), और *प्रबुद्ध भारत* (1956) जैसे समाचार पत्रों के माध्यम से, दलितों और वंचित समुदायों के लिए सामाजिक-आर्थिक न्याय की मांग को एक मंच प्रदान किया। उनकी लेखनी ने जातिगत भेदभाव, आर्थिक शोषण, और सामाजिक असमानता के खिलाफ एक सशक्त आवाज उठाई।

यह शोध पत्र अम्बेडकर की पत्रकारिता में सामाजिक-आर्थिक समानता के विचारों का विश्लेषण करता है, जिसमें *मूकनायक* और *बहिष्कृत भारत* के विशिष्ट उद्धरणों का उपयोग किया गया है, जो *Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches* में संकलित हैं। शोध का उद्देश्य यह समझना है कि कैसे उनकी पत्रकारिता ने वंचित समुदायों को सशक्त बनाया और सामाजिक-आर्थिक सुधारों की नींव रखी। पत्र आज के भारत में उनकी पत्रकारीय विरासत की प्रासंगिकता को भी जांचता है।

2. साहित्य समीक्षा

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर की पत्रकारिता और सामाजिक-आर्थिक समानता के विचार पर शोध साहित्य में व्यापक रूप से चर्चा की गई है। यह साहित्य समीक्षा अम्बेडकर की पत्रकारीय लेखनी, विशेष रूप से उनके समाचार पत्रों जैसे *मूकनायक*, *बहिष्कृत भारत*, *जनता*, और *प्रबुद्ध भारत*, के माध्यम से सामाजिक-आर्थिक समानता के उनके दृष्टिकोण का विश्लेषण करती है। इस समीक्षा में प्राथमिक स्रोतों (*Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches*) और द्वितीयक स्रोतों (जीवनी, शोध पत्र, और पुस्तकें) का उपयोग किया गया है, जो इस विषय पर गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

* अतिथि व्याख्याता, जनसंचार विभाग, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विवि, रायपुर, छत्तीसगढ़

† सहायक प्राध्यापक, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, श्री रावतपूरा सरकार विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

प्राथमिक स्रोतों

अमबेडकर के स्वयं के लेखों और संपादकीयों, जो *Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches* (1979-2003) में संकलित हैं, इस शोध का आधार हैं। *मूकनायक* (1920) में अम्बेडकर ने दलितों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डाला, जिसमें उन्होंने लिखा, “हिंदू समाज की यह विडंबना है कि वह उन लोगों को नीच मानता है, जिनके श्रम पर उसका अस्तित्व टिका है” (Vol. 17, Part 3, p. 5)। यह उद्धरण उनकी पत्रकारिता में सामाजिक समानता के लिए प्रारंभिक दृष्टिकोण को दर्शाता है। *बहिष्कृत भारत* (1927) में उन्होंने आर्थिक स्वतंत्रता को सामाजिक सम्मान से जोड़ा, जैसे, “जब तक दलितों को आर्थिक स्वतंत्रता नहीं मिलेगी, तब तक सामाजिक सम्मान केवल एक खोखला सपना रहेगा” (Vol. 18, p. 47)। ये लेख उनकी पत्रकारिता के सामाजिक-आर्थिक समानता के लिए उपयोग को रेखांकित करते हैं। हालांकि, प्राथमिक स्रोतों की सीमा यह है कि वे अम्बेडकर के दृष्टिकोण तक सीमित हैं और समकालीन सामाजिक-आर्थिक संदर्भ की व्यापक चर्चा प्रदान नहीं करते।

द्वितीयक स्रोत

1. **जाफरलोट (2005):** क्रिस्टोफ जाफरलोट की पुस्तक *Dr. Ambedkar and Untouchability: Fighting the Indian Caste System* अम्बेडकर की पत्रकारिता को सामाजिक सुधार के एक उपकरण के रूप में विश्लेषित करती है। जाफरलोट तर्क देते हैं कि *मूकनायक* और *बहिष्कृत भारत* ने दलित चेतना को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे लिखते हैं, “अमबेडकर की पत्रकारिता ने न केवल दलितों को जागरूक किया, बल्कि उन्हें राष्ट्रीय आंदोलनों में शामिल होने के लिए प्रेरित किया” (p. 78)। हालांकि, जाफरलोट का विश्लेषण आर्थिक समानता पर कम ध्यान देता है।
2. **रॉड्रिग्स (2002):** वैलेरियन रॉड्रिग्स की *The Essential Writings of B.R. Ambedkar* में अम्बेडकर के लेखों का संकलन और विश्लेषण है। रॉड्रिग्स बताते हैं कि अम्बेडकर की पत्रकारिता ने सामाजिक-आर्थिक समानता को एकीकृत करने का प्रयास किया, विशेष रूप से *जनता* में पूंजीवाद और सामंतवाद की आलोचना के माध्यम से। वे नोट करते हैं, “अमबेडकर ने पत्रकारिता को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया, जो सामाजिक और आर्थिक शोषण को एक साथ चुनौती देता था” (p. 45)। यह विश्लेषण इस शोध के लिए प्रासंगिक है, लेकिन इसमें समकालीन प्रभाव पर गहराई से चर्चा की कमी है।
3. **कीर (2015):** धनंजय कीर की जीवनी *Dr. Ambedkar: Life and Mission* अम्बेडकर की पत्रकारीय यात्रा को उनके सामाजिक-आर्थिक सुधारों के संदर्भ में प्रस्तुत करती है। कीर के अनुसार, *मूकनायक* की स्थापना “दलितों के लिए एक क्रांतिकारी कदम था, जिसने उनकी आवाज को पहली बार मुख्यधारा तक पहुंचाया” (p. 92)। कीर का कार्य ऐतिहासिक संदर्भ प्रदान करता है, लेकिन यह पत्रकारिता के तकनीकी और शैलीगत पहलुओं पर कम ध्यान देता है।

4. **आनंद (2014):** आनंद तेलतुंबड़े की पुस्तक *Mahad: The Making of the First Dalit Revolt* में अम्बेडकर की पत्रकारिता और महाड सत्याग्रह (1927) जैसे आंदोलनों के बीच संबंध को रेखांकित किया गया है। तेलतुंबड़े तर्क देते हैं कि *बहिष्कृत भारत* ने सामाजिक-आर्थिक अधिकारों की मांग को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे लिखते हैं, “अम्बेडकर की पत्रकारिता ने दलितों को न केवल जागरूक किया, बल्कि उन्हें सामूहिक कार्रवाई के लिए प्रेरित किया” (p. 112)। यह विश्लेषण इस शोध के लिए उपयोगी है, क्योंकि यह पत्रकारिता के व्यावहारिक प्रभाव को दर्शाता है।

3. ऐतिहासिक संदर्भ

20वीं सदी के प्रारंभ में भारत की सामाजिक-आर्थिक संरचना गहरी असमानताओं से ग्रस्त थी। जाति प्रथा ने दलितों को सामाजिक और आर्थिक रूप से हाशिए पर रखा, जबकि औपनिवेशिक शासन और सामंतवादी व्यवस्था ने आर्थिक शोषण को और बढ़ाया। इस संदर्भ में, अम्बेडकर ने 1920 में *मूकनायक* की स्थापना की, जो दलितों की आवाज को मुख्यधारा तक पहुंचाने का पहला प्रयास था। इसके बाद, *बहिष्कृत भारत* ने सामाजिक बहिष्कार और आर्थिक शोषण के खिलाफ आंदोलनों को गति दी। *जनता* और *प्रबुद्ध भारत* ने उनके विचारों को और व्यापक दर्शकों तक पहुंचाया।

अम्बेडकर की पत्रकारिता स्वतंत्रता संग्राम के समानांतर थी, लेकिन उनकी दृष्टि गांधीवादी नैतिक सुधारों से भिन्न थी। उन्होंने सामाजिक-आर्थिक संरचनाओं में मूलभूत परिवर्तन की आवश्यकता पर जोर दिया, जिसे उनकी पत्रकारिता ने प्रभावी ढंग से व्यक्त किया।

4. शोध उद्देश्य :

1. अम्बेडकर की पत्रकारिता में सामाजिक-आर्थिक समानता के विचारों का विश्लेषण करना।
2. उनकी पत्रकारिता के वंचित समुदायों के सशक्तीकरण में योगदान को समझना।
3. सामाजिक-आर्थिक सुधारों और संवैधानिक नीतियों पर उनके प्रभाव की जांच करना।
4. वर्तमान भारत में उनकी पत्रकारीय विरासत की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।

5. परिकल्पना:

डॉ. अम्बेडकर की पत्रकारिता ने सामाजिक-आर्थिक समानता के विचार को प्रभावी ढंग से प्रचारित और सशक्त किया।

उनकी पत्रकारिता ने दलित और वंचित समुदायों में जागरूकता और संगठन को बढ़ावा दिया।

अम्बेडकर की पत्रकारिता ने भारतीय संविधान में सामाजिक-आर्थिक समानता की नीतियों को आकार दिया।

उनकी पत्रकारीय विरासत आधुनिक भारत में सामाजिक-आर्थिक असमानता को संबोधित करने में प्रासंगिक बनी हुई है।

6. शोध प्रविधि :

गुणात्मक शोध दृष्टिकोण: अम्बेडकर की पत्रकारिता का विश्लेषण ऐतिहासिक और सैद्धांतिक दृष्टिकोण से किया गया।

प्राथमिक स्रोत विश्लेषण: Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches से मूकनायक और बहिष्कृत भारत के उद्धरणों का अध्ययन किया गया।

द्वितीयक स्रोत समीक्षा: जाफरलोट, रॉड्रिग्स, कीर, और तेलतुंबड़े जैसे विद्वानों की पुस्तकों का उपयोग संदर्भ के लिए किया गया।

तथ्यात्मक डेटा उपयोग: NSSO (2018) और Census (2011) से सामाजिक-आर्थिक असमानता के आँकड़ों का समावेश किया गया।

7. तथ्य एवं विश्लेषण

सामाजिक-आर्थिक समानता पर अम्बेडकर के विचार

अम्बेडकर के लिए सामाजिक-आर्थिक समानता एक ऐसी व्यवस्था थी, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को जाति, धर्म, या जन्म के आधार पर भेदभाव के बिना समान अवसर और सम्मान प्राप्त हो। उनकी पत्रकारिता में यह विचार स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि सामाजिक समानता बिना आर्थिक समानता के अधूरी है।

7.1 सामाजिक समानता का आधार:

अम्बेडकर का मानना था कि जाति प्रथा सामाजिक समानता की सबसे बड़ी बाधा है। *मूकनायक* के पहले अंक (31 जनवरी 1920) में उन्होंने लिखा:

“हिंदू समाज की यह विडंबना है कि वह उन लोगों को नीच मानता है, जिनके श्रम पर उसका अस्तित्व टिका है। सामाजिक समानता तभी संभव है, जब अछूतों को मानव के रूप में स्वीकार किया जाए।” (*Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches, Vol. 17, Part 3, p. 5*)

यह उद्धरण दर्शाता है कि अम्बेडकर ने सामाजिक समानता को मानवीय गरिमा और सम्मान से जोड़ा। उन्होंने छुआछूत, मंदिर प्रवेश, और सार्वजनिक संसाधनों तक पहुंच जैसे मुद्दों को अपनी पत्रकारिता में उठाया।

7.2 आर्थिक समानता का महत्व:

अम्बेडकर ने आर्थिक असमानता को सामाजिक भेदभाव का मूल कारण माना। *बहिष्कृत भारत* (3 जून 1927) में उन्होंने लिखा:

“जब तक दलितों को आर्थिक स्वतंत्रता नहीं मिलेगी, तब तक सामाजिक सम्मान केवल एक खोखला सपना रहेगा। शिक्षा और रोजगार ही वह साधन हैं, जो हमें इस गुलामी से मुक्त कर सकते हैं।” (*Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches, Vol. 18, p. 47*)

इस उद्घरण से स्पष्ट है कि अम्बेडकर ने शिक्षा और रोजगार को आर्थिक सशक्तिकरण का आधार माना। उन्होंने पूंजीवाद और सामंतवाद की आलोचना की, जो वंचित समुदायों को शोषित रखते थे।

पत्रकारिता में विचारों की अभिव्यक्ति:

- **मूकनायक (1920):** इस समाचार पत्र में अम्बेडकर ने दलितों की आर्थिक स्थिति पर लेख लिखे। एक लेख में उन्होंने बंधुआ मजदूरी की निंदा करते हुए कहा:

“दलितों का श्रम समाज की रीढ़ है, फिर भी उन्हें न तो उचित मजदूरी मिलती है और न ही सम्मान। आर्थिक समानता के बिना सामाजिक सुधार असंभव है।” (*Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches, Vol. 17, Part 3, p. 12*) इस लेख ने दलितों को शिक्षा और स्वरोजगार के लिए प्रेरित किया।

- **बहिष्कृत भारत (1927):** इस पत्र में अम्बेडकर ने सामाजिक और आर्थिक शोषण को जोड़ा। उन्होंने सरकारी नौकरियों में दलितों के लिए अवसरों की मांग की और लिखा:

“आर्थिक शक्ति ही सामाजिक शक्ति का आधार है। हमें नौकरियों और संसाधनों में हिस्सेदारी चाहिए, ताकि हम समाज में बराबरी का स्थान बना सकें।” (*Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches, Vol. 18, p. 63*)

- **जनता (1930):** इस समाचार पत्र में उन्होंने पूंजीवाद की आलोचना की और समाजवादी नीतियों की वकालत की। एक लेख में उन्होंने कहा:

“पूंजीवाद और जातिवाद दोनों शोषण के दो चेहरे हैं। सामाजिक-आर्थिक समानता के लिए हमें इन दोनों को चुनौती देनी होगी।” (*Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches, Vol. 19, p. 89*)

- **प्रबुद्ध भारत (1956):** बौद्ध धर्म अपनाने के बाद, अम्बेडकर ने बौद्ध दर्शन के आधार पर समानता की वकालत की। उन्होंने लिखा:

“बुद्ध का समता और करुणा का दर्शन ही वह मार्ग है, जो सामाजिक-आर्थिक असमानता को मिटा सकता है।” (*Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches, Vol. 18, p. 145*)

संवैधानिक दृष्टिकोण:

अम्बेडकर की पत्रकारिता में व्यक्त विचार भारतीय संविधान में परिलक्षित हुए। अनुच्छेद 14 (कानून के समक्ष समानता), अनुच्छेद 15 (भेदभाव का निषेध), और अनुच्छेद 16 (रोजगार में समान अवसर) उनके सामाजिक-आर्थिक समानता के विचारों का परिणाम थे। उनकी पत्रकारिता ने आरक्षण नीति की नींव रखी, जो वंचित समुदायों को आर्थिक अवसर प्रदान करती है।

7.3 पत्रकारिता के माध्यम से सामाजिक-आर्थिक समानता का प्रभाव जागरूकता और संगठन:

मूकनायक के एक लेख में, अम्बेडकर ने दलितों को आह्वान किया:

“हमें अपनी आवाज को संगठित करना होगा, ताकि हम अपनी हक की मांग कर सकें।” (*Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches, Vol. 17, Part 3, p. 28*) इस आह्वान ने 1927 के महाड सत्याग्रह जैसे आंदोलनों को प्रेरित किया, जिसमें दलितों ने सार्वजनिक पानी के स्रोत तक पहुंच की मांग की। बहिष्कृत भारत ने इन आंदोलनों को दस्तावेजित किया और दलित समुदाय को एकजुट किया।

- **आर्थिक सशक्तीकरण:**

अम्बेडकर ने शिक्षा को आर्थिक स्वतंत्रता का आधार माना। मूकनायक में उन्होंने लिखा: “शिक्षा वह हथियार है, जो हमें आर्थिक और सामाजिक गुलामी से मुक्त करेगा।” (*Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches, Vol. 17, Part 3, p. 15*) उनकी पत्रकारिता ने दलितों को सरकारी नौकरियों, तकनीकी शिक्षा, और स्वरोजगार के लिए प्रेरित किया।

- **सामाजिक सुधार:**

बहिष्कृत भारत में अम्बेडकर ने मंदिर प्रवेश आंदोलनों का समर्थन किया और लिखा:

“सामाजिक समानता का पहला कदम है कि हम उन जगहों पर जाएं, जहां हमें रोका जाता है।” (*Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches, Vol. 18, p. 55*) इस लेखन ने सामाजिक भेदभाव को चुनौती दी और दलितों में आत्मविश्वास जगाया।

- **आलोचनात्मक दृष्टिकोण:**

अम्बेडकर ने पूंजीवाद और सामंतवाद की आलोचना की। *जनता* में उन्होंने लिखा: “जब तक संसाधनों का वितरण असमान रहेगा, तब तक समानता एक सपना ही रहेगा।” (*Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches, Vol. 19, p. 102*) उन्होंने समाजवादी नीतियों की वकालत की, जो वंचित समुदायों को सशक्त बनाए।

- **आधुनिक प्रासंगिकता**

अम्बेडकर की पत्रकारिता आज भी प्रासंगिक है। भारत में सामाजिक-आर्थिक असमानता, जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में दलितों की सीमित पहुंच, एक चुनौती है। उनकी पत्रकारिता से प्रेरित आरक्षण नीतियां और सामाजिक योजनाएं वंचित समुदायों के उत्थान में महत्वपूर्ण हैं। उनकी लेखनी ने समावेशी पत्रकारिता को प्रेरित किया, जो डिजिटल युग में सामाजिक मीडिया पर गूंजती है। वैश्विक स्तर पर, उनके विचार सामाजिक न्याय के आंदोलनों को प्रभावित करते हैं।

निष्कर्ष

डॉ. अम्बेडकर की पत्रकारिता सामाजिक-आर्थिक समानता के लिए एक क्रांतिकारी मंच थी। मूकनायक और बहिष्कृत भारत के उद्घरणों से स्पष्ट है कि उन्होंने सामाजिक और आर्थिक शोषण को एकसाथ जोड़ा और दलितों को सशक्त बनाने के लिए शिक्षा, रोजगार, और संगठन पर जोर दिया। उनकी पत्रकारिता ने न केवल तत्कालीन समाज में परिवर्तन की नींव रखी, बल्कि भारतीय संविधान और आधुनिक नीतियों में भी उनके विचारों का प्रभाव देखा जाता है। उनकी विरासत हमें सिखाती है कि सामाजिक-आर्थिक समानता के लिए निरंतर संघर्ष और जागरूकता आवश्यक है।

संदर्भ :-

- Ambedkar, Ambedkar, B.R. (1979-2003). *Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches*. Education Department, Government of Maharashtra.
- Jaffrelot, Christophe (2005). *Dr. Ambedkar and Untouchability*. New York: Columbia University Press.
- Keer, Dhananjay (2015). *Dr. Ambedkar: Life and Mission*. Mumbai: Popular Prakashan.
- Rodrigues, Valerian (2002). *The Essential Writings of B.R. Ambedkar*. Oxford University Press.
- Teltumbde, Anand (2014). *Mahad: The Making of the First Dalit Revolt*. New Delhi: Aakar Books.